Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

कुम्भपर्व और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. सुधीर कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य (संस्कृत), बाबा बरुआदास पी.जी. कॉलेज, परुइया आश्रम, अम्बेडकरनगर, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Accepted : 05 Oct 2024
Published : 30 Oct 2024

Publication Issue :
September-October -2024
Volume 7, Issue 5

Page Number : 72-78

शोधसारांश– भारतीय संस्कृति मुक्ति मार्गी है । कुंभ स्नान प्रायश्चित का साधन है. इससे पिछले पाप कर्मों से मुक्ति मिलती है. अग्निपुराण में अग्निदेव ने कहा है– यह तीर्थ भोग और मोक्ष दोनों का प्रदाता है। प्रयाग में वेद और यज्ञ मूर्तिमान हैं, अतः इसका नाम स्मरण करने और यहाँ की मिट्टी लेने से जीव पापमुक्त हो जाता है। प्रयाग के संगम क्षेत्र में किये गये दान–पुण्य आदि से अक्षयफल की प्राप्ति होती है। यहाँ पर प्राण त्याग, वेद और लोक वचनों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रयाग को साठ करोड़ तीर्थों का सान्निध्य प्राप्त होता है, इसीलिये यह सर्वश्रेष्ठ तीर्थ हैं।

मुख्य शब्द– कुम्भ,मुक्ति, सांस्कृतिक, संगम, प्रयाग, अक्षयफल, पापमुक्त, मूर्तिमान, भारतीय संस्कृति।

पूर्णः कुम्भोऽधिकाल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः ।
स इमा विश्वाभुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमन् ।।–अथर्व 19/53/3)[1]

संस्कृति किसी राष्ट्र की अन्तश्चेतना है और सभ्यता उसका वाह्य कलेवर। व्यक्ति के मानसिक विचारों से उसका क्रियात्मक आचार निर्धारित होता है। भूयशः पुनरावृत्त आचारों से प्रवृत्ति का जन्म होता है तथा घनीभूत प्रवृत्तियों से चरित्र बनता हैं। चरित्र निर्माण की यही व्यक्तिगत प्रक्रिया जब समाष्टिगत रुप धारण करती हैं तब वह संस्कृति कही जाती है। इस दृष्टि से संस्कृति जहाँ एक ओर विचारों की अविच्छिन्न परम्परा होने के कारण जीवन्त होती है वहीं दूसरी ओर चरम परिष्कारभूत चरित्र पर आधृत होने के कारण चिरस्थायिनी भी है। "आत्मसंस्कृतिर्वाव, एतै सृजमान आत्मानं संस्कुरुते" कहते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में मनुष्य की अन्तःकरण की शुद्धि को ही संस्कृति कहा गया है[2]। 'सम' पूर्वक 'कृ' धातु से 'क्तिन' प्रत्यय के योग 'संस्कृति' शब्द बना है। दैनिक व्यवहार में संस्कृति से आशय समझा जाता है– मानव की मानसिक उन्नति, उसकी प्रशंसनीय आचरण पद्धति। विद्या से विभूषित तथा सद्गुणों से मण्डित मानव सुसंस्कृत माना जाता है। उच्च

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

कोटि का आदर्शवाद और श्रेष्ठ जीवन–पद्धित संस्कृति के अन्तर्गत माने गये है। श्रेष्ठ जीवन पद्धति समाज के उत्सवों और पर्वों से ही परिलक्षित होती हैं।

महान् संस्कृतियाँ निरंतर जीवन्त रहते हुए लगातार विकसित होती रहती है तथा बदलते हुए समय के साथ यह अपने मूल्यों और परंपराओं को संजोए रखती है। अन्य संस्कृतियों के साथ आदान–प्रदान से यह समृद्ध होती है और बदले में उन्हें भी प्रभावित करती है। इसके जीवन्त रहने के लिए लोगों की सक्रिय भागीदारी बेहद महत्वपूर्ण है। जब लोग अपनी संस्कृति में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तभी वह जीवंत और सशक्त बनी रहती है।

विभिन्न पर्व, त्यौहार और उत्सव, कला और साहित्य, शिक्षा और धर्म जैसी गतिविधियां संस्कृ ति को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अनेकता में एकता के भाव के साथ विभिन्न मत–मतान्तरों, जातियों और भाषाओं के लोग एक साझा संस्कृति से जुड़ते हुए आध्यात्मिकता की भावनासे उसे परिपुष्ट करते हैं तथा उत्कृष्ट जीवन मूल्यों को युवा पीढ़ियों तक अभिव्याप्त करते हैं। इन्हीं उत्कृष्ट जीवन मूल्यों एवं पद्धतियों से पर्वों और उत्सवों में आध्यात्मिक मूल्यों का संयोजन से संस्कृति का आधार निर्मित होता है।

भारतीय संस्कृति के अनेक स्तम्भों में से अनमोल रत्नों से विनिर्मित आधार स्तम्भरूप कुम्भ पर्व विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक एवं आध्यात्मिक समागम है। यह केवल एक मेला नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, आस्था और धर्म का एक प्रतीक पर्व है जो विश्व को आध्यात्मिकता, संस्कृति, एकता और परंपराओं से जोड़ता है। कुंभ मेला हर बार चार पवित्र नदियों – गंगा, यमुना, गोदावरी और शिप्रा के तट पर आयोजित किया जाता है। इसी लिए गोस्वामी तुलसीदस ने कहा है कि इसे स्वप्न में भी पाप रुपी शत्रु नहीं पा सकते[3]–.

छेत्रु अगम गढु गाढ़ सुहावा। सपनेहुं नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा ।।

सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रनधीरा ।

देवासुर संग्राम में अमृतकलश को लेकर हुए संघर्ष में कुछ बूंदें अमृत की चार स्थानों पर गिरी थीं, जहां आज कुंभ मेला आयोजित किया जाता है। माना जाता है कि इन स्थानों पर स्नान करने से मोक्ष प्राप्त होता है। कुंभपर्व न केवल सामाजिक एकता का प्रतीक है अपितु यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के साथ लोगों को रोजगार प्रदान करता है और पर्यटन को बढ़ावा देता है। यह पर्व विभिन्न मतों, जातियों, धर्मों और क्षेत्रों के लोगों को एक साथ लाता है ।यहाँ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, धार्मिक अनुष्ठान और प्रदर्शनियां भारतीय संस्कृति की समृद्धि तथा उसकी जीवन्तता को व्यक्त करती हैं।

महाभारत और पुराणों में भी प्रयागराज का उल्लेख धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में किया गया है।

भारतीय संस्कृति में पुण्यलाभ और पापक्षय को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है जिसकी प्राप्ति प्रयागकल्पवास से होती है मत्स्यपुराण के अनुसार–

गोभूहिरण्यदानेन यत्फलं प्राप्नुयान्नरः। स तत्फलमवाप्नोति तत्तीर्थं स्मरते पुनः।।[4]

शृणु राजन्प्रयागे तु अनाशकफलं विभो। प्राप्नोति पुरुषो धीमाञ्श्रद्दधानो जितेन्द्रियः।।[5]
अहीनाङ्गोऽप्यरोगश्च पञ्चेन्द्रियसमन्वितः। अश्वमेधफलं तस्य गच्छतस्तु पदे पदे।।
पञ्चयोजनविस्तीर्ण प्रयागस्य तु मण्डलम्। प्रविष्टमात्रे तद्भूमावश्वमेधः पदे पदे।।[6]

प्रतिपल आधुनिक हो रही जीवन शैली में कुम्भ पर्व प्रत्येक आयवर्ग के लोगों में परम्पराओं के माध्यम से आन्तरिक घनिष्ठता को जाग्रत करते हुए उनमें पारस्परिक संवाद उत्पन्न कर एक वास्तविक सनातन पहचान को उपस्थित करती है।

हमारी संस्कृति यथार्थ के बहुआयामी पक्ष को स्वीकार करती है और दृष्टिकोणों, व्यवहारों, प्रथाओं और संस्थाओं की विविधता का स्वागत करती है। यह एकरूपता के विस्तार के लिए विविधता के दमन का प्रयत्न नहीं करती अपितु "अनेकता में एकता और एकता में अनेकता" के आदर्श को उपस्थित करती है। 'वसुधैव कुटुंबकम'[7] इसका मूल मंत्र है। पाश्चात्य देशों की बात करें, तो उसने दुनिया को केवल बाजार माना है। सनातन संस्कृति में उदारता और समन्वय की भावना का निदर्शन तथा भगवान राम और कृष्ण के आचरणों का उपस्थापन महर्षि वेदव्यास, महर्षि वाल्मीकि, बुद्ध, महावीर, आदिगुरु शंकराचार्य, रामानुज, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, गुरुनानक साहब, संत कबीर, महर्षि अरविंद जैसी महान् विभूतियों के द्वारा पोषित की गयी हैं। महाकवि तुलसीदास ने तो "चार पदारथ भरा भंडारू" कहते हुए इसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से युक्त पुन्य प्रदेश बताया है।[8]

तीर्थराज प्रयाग की महिमा का वर्णन महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में अयोध्याकाण्ड की कई चौपाइयों में इस प्रकार किया है[9]–

संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा।।
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा।।
सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ। सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ॥
तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू। लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू।।
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई।।
सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम। बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम॥

कुंभ का अर्थ होता है घड़ा या कलश है,जो कुभि पूरणे धातु से निष्पन्न है। यह आध्यात्मिक रूप से अमृतरूप समस्त ब्रह्मांडीय सुकृतों का परमात्मतत्व से समायोजन का प्रतीक है; अथवा उनके संघनीकरण का।[10] कुंभ मेले की तिथि केवल खगोलीय घटनाओं पर आधारित नहीं है, बल्कि यह धार्मिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को भी ध्यान में रखकर तय की जाती है। इन ज्योतिषीय संयोगों के दौरानरू– पृथ्वी और आकाशीय शक्तियों के बीच सामंजस्य स्थापित होता है। इन तिथियों पर गंगा, यमुना और सरस्वती में स्नान करने से आत्मा की शुद्धि होती है। इन योगों के दौरान किया गया दान–पुण्य कई गुना अधिक फलदायी माना जाता है। त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती) में स्नान से आत्मा की शुद्धि होती है। यह माना जाता है कि इस दौरान संगम में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्रद्धालु यहां आकर पितरों का तर्पण जिससे उनके पूर्वजों को शांति मिलती है[11]–

गङ्गायमुनयोर्मध्यं पृथिव्या जघनं स्मृतम्। प्रयागं राजशार्दूलत्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।।
तत्राभिषेकं यः कुर्यात्संगमे शषितव्रतः। तुल्यं फलमवाप्नोति राजसूर्याश्च मेधयोः ।।
न मातृवचनात्तात ! नलोकवचनादपि। मतिरुत्क्रमणीयाते प्रयागगमनंप्रति ।।
षष्टि तीर्थ सहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथापराः। तेषांसान्निध्यमत्रैवतीर्थानां कुरुनन्दन ।।
या गतियोंगयुक्तस्य सन्यस्तस्य मनाषिणः। सा गतिस्त्यजतः प्राणान् गङ्गायमुनसंगमे ।।
न ते जीवन्ति लोकेऽस्मिन्यत्र तत्र युधिष्ठिर ! ये प्रयागं न सम्प्राप्तास्त्रिषु लोकेषु वञ्चिताः ।।
एवं दृष्ट्वा तु तत्तीर्थं प्रयागंपरमं पदम्। मुच्यते सर्वपापेभ्यः शशांकइव राहुणा ।।
कम्बलाश्वतरौ नागौ यमुनादक्षिणे तटे। तत्ररनात्वाचपीत्याचमुच्यते सर्व्वपातकैः ।।
तत्र गत्वा नरः स्नानं महादेवस्य धीमतः। समस्तांस्तारयेत् पूर्व्वान्दशातीतान्दशावरान्।।
उत्तरेण प्रतिष्ठानं भागीरथ्यास्तु सव्यतः। हंसप्रपतनं नाम तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।।
अश्वमेधफलं तत्र स्मृतमात्रे तु जायते। यावच्चन्द्रश्च सूर्य्यश्च तावत्स्वर्गे महीयते।
उर्वशीपुलिने रम्ये विपुलेहंसपाण्डुरे। परित्यजतियः प्राणाञ्छृणुतस्यापियत्फलम्।।
षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिवर्षशतानि च। आस्ते स पितृभिः सार्द्ध स्वर्गलोकेनराधिप ।
अथ सन्ध्यावटे रम्ये ब्रह्मचारी समाहितः। नरः शुचिरुपासीत ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ।।

4 कुम्भ पृथ्वी पर होते हैं और 8 कुम्भ देवलोक में होते हैं। क्रमानुसार चारों स्थानों पर प्रत्येक 3 वर्षों के अंतराल पर लगता है कुंभ मेलारू– युद्ध के दौरान सूर्य, चंद्र और शनि आदि देवताओं ने कलश की रक्षा की थी, अतः उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र–सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, तब कुम्भ का योग होता है, और चारों पवित्र स्थलों पर प्रत्येक 3 वर्ष के अंतराल पर क्रमानुसार कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है। इस तरह देखें तो प्रत्यके एक स्थान पर 12 साल बाद महाकुंभ मेले का आयोजन होता है[12]। जब बृहस्पति वृषभ राशि में होता है और सूर्य मकर राशि में गोचर करता है, तब प्रयागराज में कुंभ मेला आयोजित किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि एक ओर जहां नासिक और उज्जैन के कुंभ को आमतौर पर सिंहस्थ कहा जाता है तो अन्य नगरों में कुंभ, अर्धकुंभ और महाकुंभ का आयोजन होता है।[13]

वाल्मीकि रामायण में कहा गया है कि राम अपने वनवास काल में जब ऋषि भारद्वाज से मिलने गए तो वार्तालाप में ऋषिवर ने कहा कि हे राम, गंगा–यमुना के संगम का जो स्थान है वह बहुत ही पवित्र है आप वहां भी रह सकते हैं।

अवकाशो विविक्तोयं महानद्यो समागमे । पुण्यश्च रमणीयश्च वसत्विह भवान्सुखम् [14]।।
तस्य प्रयागे रामस्य तं महर्षिमुपेयुषः । प्रपन्नारजनीपुण्या चित्राः कथयतः कथाः[15]।।

प्रयागराज की महत्ता पुराणों में विस्तार से बताई गई है। एक बार शेषनाग से ऋषिवर ने भी यही प्रश्न किया था कि प्रयागराज को तीर्थराज क्यों कहा जाता है? इस पर शेषनाग ने उत्तर दिया कि एक ऐसा अवसर आया, जब सभी तीर्थों की श्रेष्ठता की तुलना की जाने लगी, उस समय भारत में समस्त तीर्थों को तुला के एक पलड़े पर रखा गया और प्रयागराज को दूसरे पलड़े पर, फिर भी

प्रयागराज का पलड़ा भारी पड़ गया। दूसरी बार सप्तपुरियों को एक पलड़े में रखा गया और प्रयागराज को दूसरे पलड़े पर, वहां भी प्रयागराज वाला पलड़ा भारी रहा। इस प्रकार प्रयागराज की प्रधानता होने से इसे तीर्थों का राजा कहा जाने लगा। इस पावन क्षेत्र में दान, पुण्य, कर्म, यज्ञ आदि के साथ–साथ त्रिवेणी संगम का अति महत्व है।

भारतीय संस्कृति मुक्ति मार्गी है । कुंभ स्नान प्रायश्चित का साधन है. इससे पिछले पाप कर्मों से मुक्ति मिलती है. अग्निपुराण में अग्निदेव ने कहा है– यह तीर्थ भोग और मोक्ष दोनों का प्रदाता है। प्रयाग में वेद और यज्ञ मूर्तिमान हैं, अतः इसका नाम स्मरण करने और यहाँ की मिट्टी लेने से जीव पापमुक्त हो जाता है। प्रयाग के संगम क्षेत्र में किये गये दान–पुण्य आदि से अक्षयफल की प्राप्ति होती है। यहाँ पर प्राण त्याग, वेद और लोक वचनों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रयाग को साठ करोड़ तीर्थों का सान्निध्य प्राप्त होता है, इसीलिये यह सर्वश्रेष्ठ तीर्थ हैं[16]।

प्रयाग में स्नान तीर्थ का उल्लेख अतीत की गलतियों और अपराध बोध के लिए प्रायश्चित्त के साधन के रूप में किया गया है–

वक्ष्ये प्रयागमाहात्म्यं भुक्तिमुक्तिप्रदं परम् । प्रयागे ब्रह्माविष्ण्वाद्या देवा मुनिवराः स्थिताः।।
तत्र वेदाश्च यज्ञाश्च मूर्तिमन्तः प्रयागके। स्तवनादस्य तीर्थस्य नामसंकीर्तनादपि ।।
मृत्तिकालम्भनाद्वाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते। प्रयागे सङ्गमे दानं श्राद्धं जप्यादि चाक्षयम् ।।
न वेदवचनाद्विप्र न लोकवचनादपि । मतिरुत्क्रमणीयान्ते प्रयागे मरणं प्रति ।।
दशतीर्थसहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथाऽपराः। तेषां सांनिध्यमत्रैव प्रयागं परमं ततः ।।

महाभारत के तीर्थयात्रा पर्व (वन पर्व) प्रयाग को प्रथम श्रेणी का तीर्थ कहा गया है जहाँ स्नान करके, निष्कलंक हो जाता है और स्वर्ग को प्राप्त करता है[17]।

ततो गच्छेत राजेन्द्र प्रयागमृषि संस्तुतम्। यत्र ब्रह्मादयो देवा दिशश्च सदिगीश्वराः ।।
तत्र हंसप्रपतनं तीर्थं त्रैलोक्य विश्रुतम् । तथाश्वमेधिकं चौव गंगायां कुरुनंदन ।।
यमुना गंगया सार्धं संगता लोक पावनी । गंग यमुनयोर्मध्यं पृथिव्या जघनं स्मृतम् ।।
चतुर्विद्ये च यत्पुण्यं सत्यवादिषु चौवयत्। स्नात एव तदाप्नोति गंगा यमुन संगमे ।।

सनातन संस्कृति में व्यक्ति सत्य, दान, आत्म–नियंत्रण, धैर्य और अन्य जैसे मूल्यों के साथ जीवन व्यतीत करता है। महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है कि कुंभ तीर्थ स्नान तथा दान का महत्व वर्णित है –

षष्टिह्रद उपस्पृश्य चान्नदानाद विशिष्यते।
दशतीर्थ सहस्त्राणि तिरत्नकोट्यस्तथापरा।।

644 ई. में प्रयाग में हुए कुंभ का वर्णन बौद्ध चीनी यात्री ह्वेन त्सांग (ह्वेन त्सांग) ने राजा हर्ष और उनकी राजधानी प्रयाग में नदियों के संगम पर हिंदू स्नान अनुष्ठानों का भी उल्लेख किया है। कुछ विद्वानों के अनुसार, यह कुंभ मेले का सबसे पुराना जीवित ऐतिहासिक विवरण है, जो 644 ई. में वर्तमान प्रयाग में हुआ था। ईसका महत्त्व ओसे भी अति प्राचीन है । इसी लिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि– को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ । कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ।।

अस तीरथपति देखि सुहावा । सुख सागर रघुबर सुखु पावा ।।[18]

अतः निश्चित ही–

किं गया पिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम् ।
कुरुक्षेत्रे च दानेन प्रयागे वपनं न यदि ।।

---

1. प्रयाग–कुंभ–रहस्य, में इसका अर्थ क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने इस प्रकार किया हैरू समय के प्रयाग से धर्मात्मा लोग अनेक सम्पत्तियों के साथ सद्मति प्राप्त करते हैं। वह महाप्रबल सब स्थानों में परमात्मा के सामर्थय के बीच वर्तमान है, उसकी महिमा को बुद्धिमान जानते हैं। वहीँ शास्त्री जी ने इसको इस रूप में प्रस्तुत किया है– हे संतगण! पूर्ण कुंभ उस समय पर (बारह वर्षो के बाद) आया करता है जिसे हम अनेक बार प्रयागादि तीर्थो में देखा करते हैं। कुंभ उस समय को कहते हैं जो महान आकाश में ग्रह राशि आदि के योग से होता है।

2."आत्मसंस्कृतिर्वाव, एतै सृजमान आत्मानं संस्कुरुते" – ऐतरेय ब्राह्मण 6 / 5 / 1

3.प्रयाग क्षेत्र ही दुर्गम, मजबूत और सुंदर गढ़ (किला) है, जिसको स्वप्न में भी (पाप रूपी) शत्रु नहीं पा सके हैं। संपूर्ण तीर्थ ही उसके श्रेष्ठ वीर सैनिक हैं, जो पाप की सेना को कुचल डालने वाले और बड़े रणधीर हैं– रामचरित मानस

4.अध्याय 107/3

5.अध्याय 108/3–4

6.अध्याय 108/6

7.महोपनिषद 6/71–75

8.सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी।।
चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू।।रामचरित

9.मानस मानस, अयोध्या कांड 103–105

10.कुम् = भुवम् उम्भतीति कुम्भाः = कलशाः

11.कूर्म पूरण 1/ 12–20,24–28

12.देवानां द्वादशैर्भिर्मत्यै द्वादश वत्सरैरू जायन्ते कुम्भ पर्वाणि तथा द्वादश संख्यया।

13.हरिद्वार में कुंभ मेला तब आयोजित होता है, जब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में होता है। नासिक में कुंभ मेला तब लगता है, जब सूर्य और बृहस्पति सिंह राशि में होते हैं। इसलिए इसे सिंहस्थ भी कहते हैं। उज्जैन में कुंभ मेला तब आयोजित होता है, जब बृहस्पति सिंह राशि में और सूर्य मेष राशि में होते हैं। इसलिए इसे सिंहस्थ भी कहते हैं।

प्रत्येक तीन वर्ष में उज्जैन को छोड़कर अन्य स्थानों पर कुंभ का आयोजन होता है। हरिद्वार प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ का आयोजन होता है।

प्रत्येक 12 वर्ष में पूर्णकुंभ का आयोजन होता है। जैसे उज्जैन में कुंभ का अयोजन हो रहा है, तो उसके बाद अब तीन वर्ष बाद हरिद्वार, फिर अगले तीन वर्ष बाद प्रयाग और फिर अगले तीन वर्ष बाद नासिक में कुंभ का आयोजन होगा। उसके तीन वर्षबाद फिर से उज्जैन में कुंभ का आयोजन होगा। इसी तरह जब हरिद्वार, नासिक या प्रयागराज में 12 वर्ष बाद कुंभ का आयोजन होगा तो उसे पूर्णकुंभ कहेंगे। हिंदू पंचांग के अनुसार देवताओं के बारह दिन अर्थात मनुष्यों के बारह वर्ष माने गए हैं इसीलिए पूर्णकुंभ का आयोजन भी प्रत्येक बारह वर्ष में ही होता है।

मान्यता के अनुसार प्रयागराज में प्रत्येक 144 वर्षों में महाकुंभ का आयोजन होता है। 12 का गुणा 12 में करें तो 144 आता है। दरअसल, कुंभ भी बारह होते हैं जिनमें से चार का आयोजन धरती पर होता है शेष आठ का देवलोक में होता है।; इसी मान्यता के अनुसार प्रत्येक 144 वर्ष बाद प्रयागराज में महाकुम्भ का आयोजन होता है जिसका महत्व अन्य कुम्भ की अपेक्षा और बढ़ जाता है। सन् 2013 में प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन हुआ था क्योंकि उस वर्ष पूरे 144 वर्ष पूर्ण हुए थे। संभवतरू अब अगला महाकुंभ 138 वर्ष बाद आएगा।

सिंहस्थ का संबंध सिंह राशि से है। सिंह राशि में बृहस्पति एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर उज्जैन में कुंभ का आयोजन होता है। यह योग प्रत्येक 12 वर्ष पश्चात ही आता है। इसी तरह का योग नासिक में भी होता है अतरू वहां भी सिंहस्थ का आयोजन होता है। दरअसल, उज्जैन में 12 वर्षों के बाद ही सिंहस्थ का आयोजन होता है। इस कुंभ के कारण ही यह धारणा प्रचलित हो गई की कुंभ मेले का आयोजन प्रत्येक 12 वर्ष में होता है, जबकि यह सही नहीं है। यह मेला उज्जैन को छोड़कर बाकी के तीननगरों में क्रमवार तीन तीन वर्षों में ही आयोजित होता है। वर्तमान में प्रयागराज में अर्ध कुंभ चल रहा है।

14.वाल्मीकीय रामायण –अयोध्याकाण्ड सर्ग 54 श्लोक 22

15.वाल्मीकीय रामायण –अयोध्याकाण्ड सर्ग 54, श्लोक 34

16.अग्निपुराण, पूर्वार्धखण्ड, अध्याय 111 / 1,6,7,8,9

17.महाभारत तीर्थयात्रा पर्व (वन पर्व)

18.पापों के समूहरूपी हाथी के मारने के लिए सिंह रूप प्रयागराज का प्रभाव (माहात्म्य) कौन कह सकता है। ऐसे सुहावने तीर्थराज का दर्शन कर सुख के समुद्र रघुकुल श्रेष्ठ राम ने भी सुख पाया। रामचरित मानस ।